SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

सुप्रिया सिंह, बबिता जांगिड़, शिक्षा विभाग
श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, बेनाड़ रोड़, जयपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
सुप्रिया सिंह
बबिता जांगिड़
E-mail : supriya04081977@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/02/2026
Revised on : 10/04/2026
Accepted on : 19/04/2026
Overall Similarity : 00% on 11/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 11, 2026 (01:26 PM)
Matches: 0 / 2109 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

वर्तमान परीक्षा प्रणाली संकुचित व संकीर्ण है। यह विद्यार्थियों के नैतिक स्तर को भी निम्न बनाने के लिए उत्तरदायी है। नैतिक स्तर का मूल्यांकन परीक्षाओं में समाहित न होने की वजह से विद्यार्थी नैतिकता सम्बन्धी बातों में रूचि नहीं रखते। इसका हाानिकारक प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। परीक्षा के दौरान छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। अंकन प्रणाली में विश्वसनीयता का अभाव हो गया है। आज मूल्यांकन प्रक्रिया में कितनी पारदर्शिता है ये हम सभी जानते हैं इसलिए आवश्यकता है रचनात्मकता, सहयोग और भावनात्मक बुद्धिमता सहित दक्षताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करने के लिए छात्र के प्रदर्शन के मूल्यांकन के मानदंडों का विस्तार करें साथ ही वैकल्पिक मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करते हुए प्रासंगिक मूल्यांकन की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करें। परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में छात्रों के साथ अध्यापकों व अभिभावकों का दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापकों व अभिभावकों द्वारा सम्पूर्ण आंकलन हमें संकेत देते हैं कि बच्चों के सीखने में कहां कमी रह गई है जिसके आधार पर सीखने में सुधार के लिए उचित समय पर आवश्यक कदम उठाये जा सके।

मुख्य शब्द

संकुचित, संकीण, पारदर्शिता, रचनात्मकता, भावनात्मकता बुद्धिमता.

प्रस्तावना

मूल्यांकन का प्रयोजन यह जाँचना होता कि बालकों ने समझदारी, रूचियों, कुशलताओं, गुणों, योग्यताओं आदि को स्वयं में किस सीमा तक ग्रहण कर लिया है साथ ही छात्रों की कमियों व अच्छाइयों को भी जानने में सहायता देता है। मूल्यांकन के द्वारा ही छात्रों को उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में सहायता दी जाती है लेकिन आज की परीक्षा प्रणाली मूल्यांकन के इन प्रयोजनों पर खरी नहीं उत्तरती मूल्यांकन सिर्फ छात्रों का नहीं होना चाहिए स्वयं शिक्षकों की

कुशलता एवं सफलता का मापन भी मूल्यांकन का प्रयोजन होना चाहिए।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली संकुचित, एकांगी व संकीर्ण है। यह विद्यार्थियों के नैतिक स्तर को भी निम्न बनाने के लिए उत्तरदायी है। नैतिक स्तर का मूल्यांकन परीक्षाओं में समाहित न होने की वजह से विद्यार्थी नैतिकता सम्बन्धी बातों में रूचि नहीं रखते। इसका हानिकारक प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर पडता है। परीक्षा के दौरान छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। अंकन प्रणाली मे विश्वसनीयता का अभाव हो गया है। आज मूल्यांकन प्रक्रिया में कितनी पारदर्शिता है ये हम सभी जानते है इसी के परिणाम स्वरूप आज गुणात्मक शिक्षा के लाभ हेतु सफल मूल्यांकन पद्धति की आवश्यकता है यदि विद्यार्थी का परिणाम सार्थक न हो अथवा उसकी अवहेलना होती हो अथवा मूल्यांकन पद्धति कठोर हो तो गुणात्मक शिक्षार्जन करने में क्षेत्र में बाधा आती है।

समस्या का औचित्य

वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ केवल कुछ ही योग्यताओं को मापती और आंकलित करती है और शिक्षा के उद्देश्यों की ओर प्रगति की सम्पूर्ण तस्वीर नहीं खींचती। यह केवल बच्चों की पाठ्य–पुस्तकीय ज्ञान को याद करने की क्षमताओं का परीक्षण ही करती है। इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन की स्थिति कुछ इस प्रकार की प्रक्रिया बन गई है जो एक तरफ तो उद्देश्य के स्तर पर मात्र औपचारिकता लगती है तो दूसरी तरफ यह विद्यार्थियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। वर्तमान परीक्षा व मूल्यांकन प्रणाली छात्रों की योग्यता का सही आंकलन नहीं करती है इसलिये परीक्षा प्रणाली में बदलाव के सम्बन्ध में अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने की आवश्यकता अनुभव हुई।

समस्या कथन

''विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन''।

शोध के उद्देश्य

- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड–प्रणाली के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड–प्रणाली के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिसीमायें

- यह शोध अध्ययन जयपुर शहर के विद्यालयों के अध्यापकों व अभिभावकों तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध में विद्यालय के केवल 50 अध्यापकों व 50 अभिभावकों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल सतत् आन्तरिक मूल्यांकन व ग्रेड–प्रणाली पर ही केन्द्रीत है।
- प्रस्तुत शोध में केवल 2 सरकारी व 1 गैर सरकारी विद्यालय के अध्यापकों का घयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण को ही प्रयुक्त किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में ऑकड़ों के विश्लेषण तथा व्याख्या सरल सांख्यिकी विधियों में प्रतिशत, मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रशिक्षणार्थियों पर पड़ने वाले आन्तरिक मूल्यांकन के प्रभाव को जानने के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। शैक्षणिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण साधन एवं उपकरण है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्याकंन प्रणाली में बदलाव के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया हैं। विद्यालय के अध्यापकों एवं अभिभावकों के चयन में यादृच्छिकी सोद्देश्य न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया है। समस्त सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में से 2 सरकारी व एक गैर सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया हैं।

शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ

H_{01}: विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में अन्तर है।

H_{02}: विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।

H_{03}: विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में अन्तर है।

H_{04}: विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त उपकरण

स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

1. प्रतिशत
2. मध्यमान
3. सह–सम्बन्ध गुणांक

विश्वनीयता एवं वैधता

प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षण की विश्वसनीयता

माध्य		सह–सम्बन्ध	अति उच्च विश्वसनीयता
103.88	110.24	.51	.75

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के शोधकर्ता ने सांख्यिकी विधि से वैधता ज्ञात करने का प्रयास किया है जिसमें उसने परीक्षण पुनः परीक्षण विधि का चयन किया। मोमेण्ट सूत्र की सहायता से 99 धनात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करती हुई अत्ति उच्च वैधता प्राप्त हुई है। अतः निर्मित प्रश्नावली को वैध माना जा सकता है।

प्रदत्तों का सारणी, विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1: सतत् आंतरिक मूल्यांकनः अध्यापक दृष्टिकोण

क्र.	उद्देश्य पर आधारित प्रश्नों का स्वरूप	शिक्षकों की सहमति
1.	सतत् आंतरिक मूल्यांकन की अनिवार्यता	81.42
2.	रूचियों का ज्ञान	79.25
3.	उपयोगिता	76.85
4.	भावना का विकास	79.14
5.	बाह्य परीक्षा से सम्बन्ध	80.57
6.	उच्च अंकों का प्रभाव	77.71

सारणी 2: सतत् आंतरिक मूल्यांकनः अभिभावक दृष्टिकोण

क्र.	उद्देश्य पर आधारित प्रश्नों का स्वरूप	अभिभावकों की सहमति
1.	सतत् आंतरिक मूल्यांकन की अनिवार्यता	84.00
2.	रूचियों का ज्ञान	75.25
3.	उपयोगिता	80.57
4.	भावना का विकास	76.57
5.	बाह्य परीक्षा से सम्बन्ध	66.28
6.	उच्च अंकों का प्रभाव	69.14

सारणी 3: ग्रेड प्रणाली अध्यापक दृष्टिकोण

क्र.	उद्देश्य पर आधारित प्रश्नों का स्वरूप	अभिभावकों की सहमति
1.	ग्रेड प्रणाली की अनिवार्यता	67.16
2.	शैक्षिक स्तर का सुधार	67.83
3.	रूचियों का मापन	59.75
4.	परीक्षक की भूमिका	61.14
5.	सभी स्तरों पर अनिवार्य	63.57

सारणी 4: ग्रेड प्रणाली अध्यापक दृष्टिकोण

क्र.	उद्देश्य पर आधारित प्रश्नों का स्वरूप	अभिभावकों की सहमति
1.	ग्रेड प्रणाली की अनिवार्यता	54.66
2.	शैक्षिक स्तर का सुधार	55.60
3.	रूचियों का मापन	60.00
4.	परीक्षक की भूमिका	67.00
5.	सभी स्तरों पर अनिवार्य	68.57

सारणी संख्या 1 की व्याख्या एवं विश्लेषण

विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्याकन प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है।

आन्तरिक अध्ययन करने पर पाया गया है कि अध्यापकों ने सारणी 1 के लगभग सभी प्रश्नों के हाँ के विकल्प पर सर्वाधिक सहमति प्रकट की है। अतः हम कह सकते है कि विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अध्यापक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

सारणी संख्या 2 की व्याख्या एवं विश्लेषण

विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है।

आन्तरिक अध्ययन करने पर पाया गया है कि अभिभावकों ने सारणी 2 के लगभग सभी प्रश्नों के हां के विकल्प पर सर्वाधिक सहमति प्रकट की है। अतः हम कह सकते हैं कि अभिभावक विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्याकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

सारणी 3 की व्याख्या एवं विश्लेषण

सारणी संख्या 3 विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एव मूल्याकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली के प्रति अध्यापको के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। आन्तरिक अध्ययन करने पर पाया गया है कि अध्यापको व अभिभावकों ने सारणी 44 के लगभग सभी प्रश्नों के हाँ के विकल्प पर सर्वाधिक सहमति प्रकट की है। अतः हम कह सकते हैं कि अध्यापक व अभिभावक विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आन्तरिक मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

सारणी संख्या 4 की व्याख्या एवं विश्लेषण

विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एव मूल्याकन प्रणाली में ग्रेड–प्रणाली के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण से राम्बन्धित है। आन्तरिक अध्ययन करने पर पाया गया है कि अभिभावको ने सारणी 4 के लगभग सभी प्रश्नों के हां के विकल्प पर सर्वाधिक सहमति प्रकट की है। अतः हम कह सकते है। विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली अपनाने के प्रति अभिभावक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

निष्कर्ष

- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सत्त आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। निष्कर्षतः विद्यालयी शिक्षा में सतत् आंतरिक मूल्यांकन पर अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सतत् आंतरिक मूल्यांकन के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण से सम्यन्धित है। निष्कर्षतः विद्यालयी शिक्षा में सतत् आंतरिक मूल्यांकन पर अभिभावकों की दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एव मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। अतः निष्कर्ष रूप में विद्यालयी शिक्षा में ग्रेड प्रणाली पर अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है।
- विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एव मूल्यांकन प्रणाली में ग्रेड प्रणाली के प्रति अध्यापको के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। अतः निष्कर्ष रूप में विद्यालयी शिक्षा में ग्रेड प्रणाली पर अभिभावकों का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है।

भावी शोध हेतु सुझाव

- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव के प्रति सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली के प्रति विश्वविद्यालय स्तर के अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली की अनिवार्यता के प्रति अध्यापको व अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में विभिन्न बदलावों के प्रति अध्यापकों व अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली का विद्यार्थियों के मानसिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली के प्रति जयपुर जिले के तीन से अधिक विद्यालयों के अध्यापकों व अभिभावकों का बड़ा न्यादर्श लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।
- इस प्रकार विद्यालयी शिक्षा में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव इस विषय के अन्तर्गत किये जाने वाले अध्ययन एक अनवरत प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश (2002) *अनिताः कार्यक्रम आयोजन.* आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
2. अरोड़ा, रीटा; वालिया, शिरीष; शर्मा ओ.पी. (1997) *शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन.* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. अस्थाना, विपीन (2007) *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन.* अवनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. कपिल, एच.के. (2005) *सांख्यिकी के मूल तत्व.* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. बुच, एम.वी. (1978–83) *थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.* वॉल्यूम– एक, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली।

6. बुच, एम.वी. (183–89) *फॉर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.* वॉल्यूम–दो, एन.सी.ई.आर.टी., देहली।

7. बुच, एम.वी. (1978–83) *फॉर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.* वॉल्यूम–तीन, एन.सी.ई.आर.टी., देहली।

8. बुच, एम.वी. (1988–92) *फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* वॉल्यूम–दो, एन.सी.ई.आर.टी., देहली।

9. चेस्टर, डब्ल्यू हरिस (1968) *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल रिसर्च.* वोल्यूम–दो, अमेरिकन एजूकेशन, रिसर्च एसोशिऐशन मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

10. डिजीगन, एल.जी. (1971) *इन साइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल.* वोल्यूम–एक, द मैकमिलन कम्पनी द फी प्रेम, यू. एस.ए.।

****